हिमाचल प्रदेश तेरहवीं विधान सभा

तृतीय सत्र

समाचार भाग-1

संख्याः 22

वीरवार, 23 अगस्त, 2018/1 भाद्रपद, 1940(शक्)

सदन की कार्यवाही का संक्षिप्त अभिलेख

समयः 11.00 बजे (पूर्वाह्न)

सदन की बैठक माननीय अध्यक्ष, डॉ0 राजीव बिन्दल की अध्यक्षता में 11.00 बजे पूर्वाह्न आरम्भ हुई।

माननीय अध्यक्ष द्वारा संबोधन

"इस मॉनसून सत्र में भाग लेने के लिए मैं सभी माननीय मंत्रिगण, सदस्यों विशेष कर सदन के नेता श्री जय राज ठाकुर जी, नेता प्रतिपक्ष श्री मुकेश अग्निहोत्री जी व पूर्व मुख्य मंत्री श्री वीरभद्र सिंह जी का हार्दिक स्वागत करता हूँ। मेरा यह भरसक प्रयास रहेगा कि जहां माननीय सदस्यों को सदन में अपनी-अपनी बात रखने का पूर्ण अवसर मिले वहीं मैं आपसे यह भी अपेक्षा करूंगा कि आप भी नियमों की परिधि में रह कर चर्चाओं को सार्थक बनाएं। सभी माननीय सदस्यों से मेरी यह भी अपेक्षा है कि इस सदन की कार्यवाही को सुचारू रूप से चलाने में मुझे सभी का सहयोग मिलता रहेगा।"

(राष्ट्रगान गाया गया।)

1. शोकोद्‌गार

निम्नलिखित ने स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधान मंत्री, श्री दिले राम शवाब, पूर्व सदस्य-हिमाचल प्रदेश विधान सभा, श्रीमती उर्मिला सिंह, पूर्व राज्यपाल-हिमाचल प्रदेश, श्री कुलदीप नैय्यर, पूर्व उच्चायुक्त एवं सांसद तथा हाल ही में केरल में भारी वर्षा से उत्पन्न त्रासदी में जान गवां चुके लोगों के निधन पर अपनी श्रद्धांजलि देते हुए शोकोद्‌गार व्यक्त किएः-

1. **श्री जय राम ठाकुर, माननीय मुख्य मन्त्री**
2. **श्री मुकेश अग्निहोत्री, नेता प्रतिपक्ष**
3. **श्री सुरेश भारद्वाज, माननीय शिक्षा मंत्री**
4. **श्री विपिन सिंह परमार, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्री**
5. **श्री सुखविन्द्र सिंह सुक्खु**
6. **श्री गोविन्द सिंह ठाकुर,माननीय वन मंत्री**
7. **श्री राकेश सिंघा**
8. **श्री नरेन्द्र बरागटा**
8. **श्री सुन्दर सिंह ठाकुर**
9. **श्री रमेश चंद ध्वाला**

माननीय मंत्री डॉ0 राजीव सैजल तथा माननीय सदस्य श्री नरेन्द्र ठाकुर, श्री इन्द्र सिंह (सरकाघाट), श्री बलबीर सिंह, श्री किशोरी लाल, श्री हीरा लाल, श्री राजिन्द्र गर्ग, श्री जीत राम कटवाल, श्री विक्रमादित्य सिंह, श्री बलवीर सिंह वर्मा और श्री सुरेन्द्र शौरी ने भी शोकोद्‌गार प्रकट करने के लिए सूचनाएं दी थीं लेकिन माननीय अध्यक्ष महोदय ने समयाभाव के कारण शोकोद्‌गार की उनकी भावनाएं माननीय मुख्य मंत्री द्वारा प्रकट किए गए शोकोद्‌गार में शमिल करने के निर्देश दिए।

माननीय अध्यक्ष ने भी शोकोद्‌गार प्रकट करते हुए स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधान मंत्री, श्री दिले राम शवाब, पूर्व सदस्य-हिमाचल प्रदेश विधान सभा, श्रीमती उर्मिला सिंह, पूर्व राज्यपाल - हिमाचल प्रदेश, श्री कुलदीप नैय्यर, पूर्व उच्चायुक्त एवं सांसद तथा हाल ही में केरल में भारी वर्षा से उत्पन्न त्रासदी में जान गवां चुके लोगों के निधन पर अपने शोकोद्‌गार व्यक्त किए। स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के बारे में उद्‌गार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा -

“श्रद्धेय स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी देह रूप में आज हमारे मध्य नहीं रहे परंतु करोड़ों भारतवासियों के दिलों में अटल जी उसी प्रकार विद्यमान हैं। एक ऐसी शख्सियत जिसने सम्पादक के रूप में अपना जीवन शुरू किया। उनकी लेखनी व उनकी वाणी में जो जादू था वह लोगों के सर चढ़कर बोलने लगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा से ओतःप्रोत वह शख्स राष्ट्र की परिभाषा गढ़ता गया। यह राष्ट्र मेरा मन्दिर है, यह देश मेरा मन्दिर है; मुझे आजीवन केवल और केवल इस मन्दिर की पूजा करनी है, यह लक्ष्य लेकर जीवन जिया और यही लक्ष्य लेकर मृत्यु का आलिंगन किया।

अटल जी छोटी सी आयु में सांसद बने। भाषणशैली और उनकी विद्वता के कायल हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू जी एक दिन बरबस बोल बैठे कि आपको देश का नेतृत्व करना है। सन 1957 में पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने भविष्यवाणी की थी कि एक दिन आप देश के प्रधान मंत्री होंगे।

माननीय अटल जी हास्य और व्यंग्य के बहुत बड़े जानकार थे। मुझे एक घटना स्मरण है। सोलन में एक जनसभा का आयोजन था। मैदान छोटा था और आयोजकों ने सोचा कि मंच का स्थान भी जनसभा के लोगों के लिए रख दिया जाये। वहां पर एक बहुत बड़ा डंगा था और उस डंगे के पीछे बैठने की जगह थी और उसको मंच बना दिया गया। अटल जी आये और मंच पर गये। जब भाषण देने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने अपनी शैली में कहा कि मैं हिमाचल प्रदेश के सोलन में आया था । मुझे लगता था कि मैं किसी मंच पर आऊंगा और मंच से संबोधित करूंगा लेकिन आप लोगों ने मुझे मचान पर चढ़ा दिया। उनमें इस प्रकार का व्यंग्य और सारे समाज को एकदम साथ लेने की कला थी।

अटल जी की देशभक्ति की मिसाल देखें। जब 1971 में भारत-पाकिस्तान का युद्ध हुआ तो पूरा देश पाकिस्तान के खिलाफ़ खड़ा हो, इसके लिए अटल जी ने स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी को रणचण्डी की संज्ञा दी और कहा कि दुश्मनों का सर्वनाश कर दो। अटल जी कहते थे कि भारत में रहते हुए हमारी वैचारिक भिन्नता हो सकती है परन्तु देश के दुश्मनों के सामने हम सब भारतवासी एक हैं। परन्तु केवल 4 वर्ष उपरांत 1975 में जब देश में आपातकाल लगा; लोकतंत्र खतरे में पड़ गया तो जेल की सलाखें भी उनके तेज़ को न रोक पाई और पहली गैर-कांग्रेसी सरकार देश में बनी, जिसमें विदेश मंत्री के नाते अटल जी ने विश्व में भारत का लोहा मनवाया। अटल जी जिस विचार के थे -

"अश्वं नैव गजं नैव व्याघ्रं नैव च नैव च।
अजापुत्रं बलिं दद्यात देवो दुर्बलघातकः ॥"

अर्थात न अश्व, न हाथी और न शेर की; किसी की बलि नहीं दी जाती है। बलि केवल बकरी के बच्चे की दी जाती है। इसलिए मेरे राष्ट्र को शक्ति सम्पन्न बनना होगा। इसी दिशा में 13

मई, 1998 को पोखरन-2 का विस्फोट दुनिया को सकते में डालने वाला था। इसके कारण भारत पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध भी लगे। उनकी परवाह किये बिना अटल जी ने हमारे देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाया। विश्व के पटल पर भारत की छवि कैसी हो, पाकिस्तान व अन्य पड़ोसी देशों के साथ हमारे संबंधों की विवेचना, उसमें अटल जी का कोई सानी नहीं था।

विकास के लिए दिये जाने वाले धन का राज्यों द्वारा सही उपयोग हो, इस दृष्टि से "प्रधान मंत्री सड़क योजना" तथा "सर्व शिक्षा अभियान" जैसी महत्वकांक्षी योजनाओं का श्रीगणेश किया। महानगरों को आपस में जोड़ने के लिए "स्वर्णिम चतुर्भुज योजना" चलाई। मेरे देश में बहती हुई नदियों का पानी देश के किसान के काम आये, इसके लिए नदियों को जोड़ने की योजना जैसे उनके महत्वपूर्ण कार्य सदैव स्मरण किये जायेंगे।

देश की सीमाओं की रक्षा के लिए बलिदान देने वाले प्रहरी शहीद हैं, उनकी शहादत को देशवासी नमन करें, यह ज़ज्बा पहली बार कारगिल युद्ध के दौरान अटल जी ने पैदा किया। वीरांगनाओं का सम्मान, शहीद सैनिकों की उनके पैत्रिक स्थान पर राजकीय सम्मान के साथ अन्तेष्टि और उनके परिवार को अनेक प्रकार की सुविधाओं की शुरूआत करना उनके ज़ज्बे को दर्शाता है और आज पूरा देश उस ज़ज्बे को सलाम कर रहा है। लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी, जिसने आपातकाल का डटकर विरोध किया, लोकतंत्र की पुनः स्थापना में सर्वस्व लगाया।

हिमाचल प्रदेश के प्रति विशिष्ट लगाव व अपनापन रखने रखने वाले ऐसे महान पुरुष अटल जी को बार-बार नमन।

हिमाचल के संबंध में अनेक माननीय सदस्यों ने अपनी बात रखी है। मुझे एक घटना उधृत करती है। मुझे स्मरण आता है एक दिसम्बर, 2002 का वह दिन जब सोलन में एक विशाल रैली का आयोजन किया गया था। इस रैली का संचालन मैं स्वयं कर रहा था। इसमें श्रद्धेय स्वर्गीय श्री अटल जी ने हिमाचल प्रदेश को औद्योगिक पैकेज दिया जिसके कारण लगभग 2 लाख हिमाचलियों के लिए रोजगार के नये अवसर सृजित हुए और हिमाचल प्रदेश औद्योगिक राज्य के रूप में आगे बढ़ा। इस प्रकार हिमाचल के प्रति उनका स्नेह, प्यार व आशीर्वाद सदा स्मरण रहेगा।

उनका मंत्र था- देश पहले, पार्टी उसके बाद और मैं सबके बाद। उनका ध्येय था भारत राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाना। उनका सदैव यह वाक्य रहा कि जो आजादी हमें मिली है उसके लिए हज़ारों, लाखों लोगों ने बलिदान दिया, हमें उन बलिदानियों का कर्ज़ चुकाना है। उनकी एक कविता जिसका केवल एक अंतरा प्रस्तुत है जो बलिदानियों के लिए समर्पित है -

जो बरसों तक सड़े जेल में, उनकी याद करें,
जो फांसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।
याद करें काला पानी को,
अंग्रेजों की मनमानी को,
कोल्हू में जुट तेल पेरते,
सावरकर से बलिदान को।
याद करें बहरे शासन को,
बम से थर्राते आसन को,
भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु
के आत्मोत्सर्ग पावन को।
दया की मत फरियाद करें,
उनकी याद करें।

अर्थात् बलिदानी जिन्होंने देश को आजादी दिलाई उनके प्रति उनके समर्पण के भाव थे। उनके मन में भारतीय संस्कृति, भारतीय शास्त्रों के प्रति अगाढ़ श्रद्धा थी। उन्होंने कहा था कि राष्ट्र केवल भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं है परंतु हमारी हज़ारों साल पुरानी संस्कृति इस राष्ट्र की आत्मा है। उनकी कविता की चंद पंक्तियां जो उन्होंने कही और कैसे उन्होंने इसे सुंदर शब्दों में पिरोया है, प्रस्तुत हैं -

वेद-वेद के मंत्र-मंत्र में,
मंत्र-मंत्र की पंक्ति-पंक्ति में,
पंक्ति-पंक्ति के शब्द-शब्द में,
शब्द-शब्द के अक्षर स्वर में,
दिव्य ज्ञान-आलोक प्रदीपित,
सत्यं, शिवं, सुंदरं शोभित,
कपिल,कणाद और जैमिनि की
स्वानुभूति का अमर प्रकाशन,
विशद-विवेचन, प्रत्यालोचन,
ब्रह्मा, जगत, माया का दर्शन।
कोटि-कोटि कंठों में गूंजा
जो अति मंगलमय स्वर्गिक स्वर,
अमर राग है, अमर राग है।

स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा देश के प्रधान मंत्री के रूप में दिए गए अविस्मरणीय योगदान, उनके महान व्यक्तित्व, मानवतावादी दृष्टिकोण, कवि के रूप में लोकप्रिय छवि तथा उनके समग्र जीवन को लेकर एक डाक्यूमैंट्री फिल्म भी सदन में दिखाई गई।

दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए सदन में उपस्थित सभी द्वारा कुछ क्षण खड़े होकर मौन रखा गया।

2. प्रश्नोत्तर

शोकोद्गार व्यक्त करने में प्रश्नकाल का सारा समय व्यतीत हो जाने के कारण कार्यसूची में निर्धारित स्थगित तारांकित प्रश्न 256, 487 तथा तारांकित प्रश्न संख्या 543 से 590 तक के उत्तर सभा पटल पर रखे गए समझे गए और कार्यवाही का हिस्सा बने। अतारांकित प्रश्न संख्या 95 से 109 तक के उत्तर भी सभा पटल पर रखे गए समझे गए तथा कार्यवाही का हिस्सा बने।

01.35 बजे अपराह्न सदन की बैठक शुक्रवार, 24 अगस्त, 2018 के 11.00 बजे पूर्वाह्न तक स्थगित हुई ।

(**डॉ0 राजीव बिन्दल**)
अध्यक्ष

(**यशपाल शर्मा**)
सचिव